प्रथम अध्याय

''गिरिराज किशोर तथा विश्वास पाटील के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का तुलनात्मक अध्ययन''

प्रथम अध्याय

" गिरिराज किशोर तथा विश्वास पाटील के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का तुलनात्मक अध्ययन "

गिरिराज किशोर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1 व्यक्ति परिचय :

किसी भी साहित्यकार के जीवन पर सम-सामायिक परिस्थितियों का प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। साहित्यकार के व्यक्तित्व को सँवारने में इन परिस्थितियों का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। उनके व्यक्तित्व पर आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक परिस्थितियाँ प्रभाव डालती हैं। अत: उसका अध्ययन करने के लिए उस साहित्यकार का व्यक्तित्व देखना आवश्यक होता है। जिन परिस्थितियों के बीच साहित्यकार जीता है, उसकी प्रतिछाया उसके साहित्य में देखी जा सकती है। लेखक के जीवन की अनुभूतियों, स्मृतियों एवं कल्पनाओं की अभिव्यक्ति उसके साहित्य में हुआ करती है। अत: साहित्यकार के साहित्य को देखने से पूर्व उसके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को देखना आवश्यक है और वह इस प्रकार है -

1.1.1 जन्म-तिथि तथा जन्म-स्थान -

स्वातंत्र्योत्तर कालीन बहुचर्चित हिंदी उपन्यासकार, कथाकार एवं नाटककार गिरिराज किशोर का जन्म 8 जुलाई, 1937 को उ.प्र. के मुजफ्फरनगर के एक जमींदार परिवार में हुआ। इन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी साहित्य तथा बाल-साहित्य आदि विधाओं में लेखन किया है। वे एक सशक्त उपन्यासकार के रूप में जाने जाते हैं।

1.1.2 माता-पिता -

गिरिराज किशोर की माँ का नाम तारावती था। उनकी माँ का स्वर्गवास डेढ़ साल की उम्र में हुआ। उन्हें अपनी माता का प्यार केवल डेढ़ साल तक ही मिला। उन्हें गाना गाने का शौक था लेकिन जमींदार परिवार में ब्याहे जाने के कारण, उस गाने की स्थिति चार दीवारों में ही कैद रही। इनके पिता का नाम सूर्यप्रकाश था, जो मेहनती और ईश्वर को माननेवाले

आस्थावान इन्सान थे। इनके पिता जमींदार थे। जमींदार होने के कारण उन्हें सिर्फ कस्बों के ही नहीं तो आस-पास के गाँवों के लोग भी मानते थे। वे शांत स्वभाव के थे। ''उनका देहावसान 20 जून, 1988 को मुजफ्फरनगर में हुआ।''[1] गिरिराज किशोर को अच्छे संस्कार विरासत के रूप में मिले जिसके कारण उनके जैसे साहित्यरत्न का निर्माण हुआ। वे अपनी माता-पिता की छठी संतान हैं।

इनके पिता ने दूसरी शादी की। दूसरी पत्नी का नाम रामदुलारी है। ''उनकी रघुराज किशोर, रामराज किशोर, शिवराज किशोर, कु. उषा और चुन्नू संताने हैं अर्थात् गिरिराज किशोर की विमाता को पाँच बेटे-बेटियाँ हैं।''[2]

1.1.3 परिवार -

इनका परिवार मुजफ्फरनगर के जमींदार परिवारों में से एक था। इनके परिवार में सामंती आचरण और संस्कारों के साथ-साथ अंग्रेजियत या उनके तौर-तरीके भी रुढ़ हो चुके थे। इनका परिवार सनातनी हिंदू परिवार तथा मध्यवर्ग का प्रतिष्ठित परिवार था। इनके तीन भाई और दो बहने हैं। गिरिराज किशोर के भाईयों के नाम हैं - रघुराज, शिवराज, रामराज और बहनों के नाम हैं श्रीमती सुभद्रा गुप्ता और उषा अग्रवाल। गिरिराज किशोर माता-पिता की छठी संतान है।

आजादी के बाद गिरिराज किशोर को आर्थिक संकट से गुजरना पड़ा है। इस संदर्भ में वे स्वयं लिखते हैं - ''दरअसल तब तक जमींदारियाँ खत्म हो चुकी थी। जमीने बिकने का सिलसिला शुरू हो गया था। कर्जेवाले शुरू में सलाम करने आते थे फिर दबी जबान से कहने लगते थे, 'राय साहब, बच्चों को काम करना है। कुछ मदद (यानी भुगतान) हो जाय।' तब सूद वगैरह को अदायगी हो जाती थी। कोई जमीन बिकती तो मूल दिया जाता था। ... गाड़ी घोड़े बिक गए थे। अमीरी की खोल में गरीबी की घुसपैठ होती जा रही थी।''[3] ऐसी विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए गिरिराज किशोर का परिवार उभरा है।

गिरिराज किशोर पर अपने दादाजी के विचारों का प्रभाव दिखाई देता है जो अपने धर्म के प्रति अति संवेदनशील थे। रुढ़ि, परंपरा, अंधविश्वास तथा पर्दा प्रथाएँ परिवार में प्रचलित थी। गिरिराज किशोर को दो कन्याएँ और एक बेटा है। बड़ी बेटी का नाम जया है

1. डॉ. सुरेश सदावर्ते - कथाकार गिरिराज किशोर, पृष्ठ - 18
2. वही, पृष्ठ - 18
3. सं. हरिनारायण - कथादेश (फरवरी 2002), पृष्ठ - 12

जिसकी शादी हुई है। दूसरे बेटे का नाम शिवा है जिसने अंतर्जातीय विवाह किया। इस प्रकार गिरिराज किशोर के व्यक्तित्व निर्माण में पारिवारिक जीवन के संस्कार एवं आदर्शों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।

1.1.4 **बचपन** -

गिरिराज किशोर का बचपन मुजफ्फरनगर में बीता। माँ का देहांत होने के कारण पिताजी, दादाजी और परिवार के अन्य सदस्यों की छत्रछाया में बचपन में पले बढ़े। बचपन में बैडमिंटन खेलना और पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ना, क्रिकेट खेलना, घुड़सवारी करना आदि उनके शौक थे। अपनी बचपन की यादों को उजागर करते हुए गिरिराज जी स्वयं लिखते हैं - ''बाबा जब क्लास से लौटते थे तो पोते के लिए जरूर कुछ ना कुछ लाते थे, लाकर चुपचाप सिरहाने रख देते थे, सबेरे उठते ही सबसे पहले हाथ सिरहाने पहुँचता था ... जब कुछ रखा हुआ मिलता था तो आँखे खोलता था।''[1] इस प्रकार उनके दादा अपने पोते से बहुत प्यार करते थे। अत: उनका बचपन बहुत लाड-प्यार तथा संस्कारमय वातावरण में बीता।

1.1.5 **शिक्षा** -

इनकी प्रारंभिक शिक्षा उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर की पाठशाला में हुई। यही से इन्होंने सन् 1958 में बी.ए. की उपाधि प्राप्त की। बाद में सन् 1966 में इन्स्टिट्यूट ऑफ साईंस, आगरा से समाज-विज्ञान में एम.एस.डब्ल्यू. किया। वे एम.एस.डब्ल्यू के लिए दो साल आगरा रहे। इन दो सालों की आर्थिक स्थिति के बारे में स्वयं लिखते हैं - ''दो साल आगरा रहा। पढ़ाई के दौरान मैंने अपने पिता पर कम-से-कम भार डाला। जो वे भेज देते थे सिर आँखों पर। सत्या जीजी और सुभद्रा बहन जरूर अपनी-अपनी तरह मदद करती थी। सत्या जीजी का वरदहस्त बाद में भी रहा।''[2] इस तरह इन्होंने एम.एस.डब्ल्यू. पूरा किया। वे पीएच्.डी. भी करना चाहते थे लेकिन कुछ कारणवश बीच में ही उन्होंने पीएच्.डी. के अनुसंधान को पूर्णविराम दिया।

1.1.6 **नौकरी** -

गिरिराज किशोर एम.एस.डब्ल्यू. होने के बाद वे इलाहाबाद आए। सबसे

---

1. सं. हरिनारायण - कथादेश (फरवरी 2002), पृष्ठ - 11
2. वही, पृष्ठ - 13

पहले इलाहाबाद में उन्होंने नैनी में 'नैनी ग्लास वर्क' में वेलफेअर ऑफिसर की नौकरी की। इन्होंने "यह नौकरी छूटने के पश्चात्, उत्तर प्रदेश के शासन के श्रम एवं प्रशिक्षण निदेशालय में सहायक सेवायोजन अधिकारी के रूप में सन् 1960 से 1962 तक बड़ी मेहनत और लगन से कार्य किया।"[1] यह नौकरी छूटने पर वे सन् 1964 से सन् 1966 तक हिंदी लेखक के रूप में इलाहाबाद में रहकर मुक्त रूप से लेखन किया। सन् 1966 से सन् 1975 तक उन्होंने कानपुर विश्वविद्यालय में सचिव, उपकुलसचिव आदि पदों पर कार्य किया। सन् 1975 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर (आई.आई.टी.) में उन्हें कुचसचिव पद मिला। लेकिन चार साल बाद सन् 1979 में तानाशाह निदेशक ने गिरिराज को निलंबित किया। इसी बीच वे हाईकोर्ट में मुकदमा जीत गए और वे सन् 31 मई, 1980 को सम्मान के साथ आई.आई.टी. में उसी पद पर पुन: विराजमान हुए। लगभग सन् 1983 तक कुलसचिव पद पर रहे। बाद में उन्हें तरक्की देकर भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर के रचनात्मक लेखन एवं प्रकाशन केंद्र का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। वे इसी पद पर से 31 जुलाई, 1997 को सेवानिवृत्त हुए।

1.1.7 विवाह -

मनुष्य के जीवन में विवाह का महत्त्वपूर्ण स्थान है। गिरिराज किशोर का विवाह श्रीमती मीरा के साथ सन् 1967 में हुआ। मीरा के रूप में उन्हें एक सहज, संतुलित, शालीन एवं सुशील पत्नी मिली। मीरा जी ने हिंदी विषय लेकर एम.ए. एवं बी.टी. की पढ़ाई पूरी की है। इन्होंने कुछ समय तक अध्यापन का कार्य किया। मीरा ने गिरिराज किशोर के सुख -दु:ख के समय में उनका अच्छी तरह साथ दिया। गिरिराज की सृजन प्रक्रिया में भी और जीवन में भी अत्यधिक सहयोग दिया।

1.1.8 दांपत्य जीवन -

गिरिराज किशोर के साहित्यिक व्यक्तित्व निर्माण में दांपत्य जीवन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। मीरा जहाँ आवश्यकता हो वहाँ गिरिराज किशोर के लेखन में प्रेरक एवं सहायक बन गयी है। गिरिराज किशोर अपने वैवाहिक जीवन से पूर्णत: संतुष्ट है। इस

1. डॉ. सुरेश सदावर्ते - कथाकार गिरिराज किशोर, पृष्ठ - 20

संदर्भ में वे स्वयं कहते हैं - "मेरे घरवालों का सहयोग तो अद्‌वितीय है ही, खास तौर से मेरी पत्नी मीरा का। वे मेरी जबरदस्त क्रिटिक है। परंतु मेरे कामों में भरपूर सहयोग देती है।"[1] अत: कहना गलत नहीं होगा कि वे अपने वैवाहिक जीवन से पूर्णत: संतुष्ट हैं।

1.1.9 साहित्य लेखन में रूचि -

गिरिराज किशोर को बचपन से ही कहानियाँ तथा उपन्यास पढ़ने का शौक था। इन्होंने परिवारवालों के विरोध के बावजूद छिप-छिपकर पढ़ना जारी रखा। जब वे नौंवी कक्षा में थे तभी से उन्होंने कहानियाँ लिखना शुरू किया था। इन्हें स्वयं की तारीफ सुनने का शौक था। इस संदर्भ में वे स्वयं लिखते हैं - "कहानियाँ तो मैं छठे-सातवें दर्जे से लिखने लगा था। पर उनका कोई मतलब नहीं था। मेरी एक कहानी 'रत्न कटारी घी जले ...' कालिज मैगजीन में नवीं क्लास में छपी थी। उस कहानी की सिनियर क्लास की लड़की ने तारीफ की थी। उसके बाद मैंने वैसे ही तारीफ सुनने के लिए कई कहानियाँ लिखीं और मौका पड़ने पर तारीफ भी की थी, जब वह तारीफ कर देती थी तो मेरा दिन बहुत अच्छा गुजरता था।"[2] अत: उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि गिरिराज किशोर को तारीफ सुनना पसंद था। अत: उन्हें साहित्य लेखन में रूचि होने के कारण ही आज वे हिंदी साहित्य जगत में उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, समीक्षक, आलोचक एवं विचारक के रूप में जाना जाता है।

1.2 व्यक्तित्व की विशेषताएँ :

गिरिराज किशोर के बाह्य एवं आंतरिक व्यक्तित्व के पक्ष पर यहाँ संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत है -

1.2.1 बाह्य और आंतरिक व्यक्तित्व -

गिरिराज किशोर का बाह्य व्यक्तित्व आकर्षक है। इनका व्यक्तित्व देखनेवालों को पहली नजर में मोह लेता है। गौर वर्ण, ऊँचा कद, दीप्तिमान चेहरा, प्रथम देखनेवाले की दृष्टि को बांध लेता है। इनका चश्मा इनके व्यक्तित्व को गंभीर बना देता है। चश्मे से झाँकती आँखें असीम स्नेह का भाव दिखाती हैं। उनकी आँखें सूक्ष्म-से-सूक्ष्म वस्तु के भीतर पहुँचकर

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 16
2. सं. हरिनारायण - कथादेश (मार्च 2002), पृष्ठ - 8-9

उसकी आंतरिकता को उजागर करने की क्षमता रखती है। किशोर जी का बाह्य व्यक्तित्व भी जितना आकर्षक है उतना ही आंतरिक व्यक्तित्व। सरल स्वभाव, स्नेहपूर्ण व्यवहार, विनोदपूर्णता तथा जिंदादिली उनके व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

1.2.2 मेधावी व्यक्तित्व -

गिरिराज किशोर को बचपन से ही पढ़ने तथा लिखने में रूचि थी। उन्होंने अनेक संघर्षमय प्रसंगों में अपनी पढ़ाई पूरी की। उन्होंने साहित्य लिखने की साधना अत्यंत अल्पायु में ही आरंभ की। इन्होंने हायस्कूल में अध्ययन करते हुए कहानियाँ लिखना एवं पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ना आरंभ किया था। इस बारे में वे स्वयं लिखते हैं - "मेरी एक कहानी 'रत्न कटारी घी जले ...' कालिज मैगजीन में नवीं क्लास में छपी थी।"[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि उन्होंने बचपन से ही लिखना शुरू किया था। उन्होंने प्रेमचंद, वृंदावनलाल वर्मा तथा शरतचन्द्र आदि को बचपन में ही पढ़ा था। अत: वे बचपन से ही मेधावी छात्र रहे हैं।

1.2.3 विभिन्न रचनाकारों से प्रभावित -

लेखक के व्यक्तित्व का विकास और दिशा निर्धारण करने में पारिवारिक सदस्य, अध्यापक एवं मुख्य व्यक्तियों के अतिरिक्त भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्यकारों का प्रभाव भी स्पष्ट है। गिरिराज किशोर पर महात्मा गांधी का भी प्रभाव रहा है। उनकी प्रेरणा और उनके कार्यों का उन पर प्रभाव दिखाई देता है। पाश्चात्य साहित्यकारों में टॉलस्टाय, चेखव, मार्कवेस, जेम्स आस्टिन आदि का प्रभाव दिखाई देता है।

1.2.4 गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित -

गिरिराज किशोर महात्मा गांधी जी के व्यक्तित्व से विशेष प्रभावित हुए हैं। उन्हें बचपन से ही गांधी जी के प्रति आकर्षण रहा है। उनका कहना है - "मुझे गांधी जी बचपन से आकृष्ट करते रहे हैं। गांधी जी के बारे में लोग जानते हुए भी कम जानते हैं। मैं समझता हूँ कि गांधी जी के बारे में लोगों को बहुत जानना बाकी है। अगर हम गांधी जी को वापस ला पायेंगे तो महत्त्वपूर्ण बात होगी। गांधी जी को जानना बहुत जरूरी है।"[2] कहना

---

1. सं. हरिनारायण - कथादेश (मार्च 2002), पृष्ठ - 8
2. सं. डॉ. राधेश्याम शर्मा - 'मधुमती' (जुलाई 1995), पृष्ठ - 33-34

सही होगा कि गिरिराज किशोर बचपन से ही गांधी जी के विचारों से पर्याप्त मात्रा में प्रभावी दिखाई देते हैं। देश को आजादी दिलाने में गांधी जी का योगदान रहा है किंतु आज उनकी ओर संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। कमलेश्वर भट्ट के द्वारा पूछे प्रश्न - गांधी जी के किन गुणों से आप ज्यादा प्रभावित है? इस प्रश्न के उत्तर का जवाब देते हुए वे कहते हैं - ''गांधी जितना अपमानित व्यक्ति मुझे इतिहास में दिखाई नहीं देता। अंतिम क्षण तक वे अपमानित होते रहे। गांधी ने समाज के छोटे से छोटे व्यक्ति के बारे में जितना सोचा और किया, किसी अन्य ने नहीं। ... गांधी जी ने सबकुछ व्यवहार में किया। वे नहीं चाहते थे कि देश बँटे और जिन्ना को प्रधानमंत्री बनाए जाने के प्रस्ताव के पीछे उनकी यही मंशा थी। लेकिन काँग्रेस नेताओं ने उनका प्रस्ताव नहीं माना। गांधी जी को आज बँटवारे का जिम्मेदार बताया जाता है।''[1] अत: कहना सही होगा कि वे गांधी जी को मानते हैं। इसी कारण ही उन्होंने गांधी जी के दक्षिण अफ्रीका के जीवन पर आधारित 904 पृष्ठों का 'पहला गिरमिटिया' जैसा बृहत उपन्यास लिखा जो हिंदी साहित्य जगत में महत्त्वपूर्ण कृति मानी जाती है।

1.2.5 मददगार -

गिरिराज किशोर का मन हमेशा गरीबों को मदद करने के लिए तत्पर रहता था। इनको अफसरी साहित्यकार कहा जाता था क्योंकि वे अपनी अफसरी का उपयोग दूसरों की मदद करने के लिए करते थे। इस संदर्भ में रवींद्र कालिया लिखते हैं - ''अपनी अफसरी से गिरिराज ने अपने साथी लेखकों को हमेशा फायदा ही पहुँचाया है। वह जब कानपुर विश्वविद्यालय में रजिस्ट्रार पद पर था, उसने अनेक प्रतिभाशाली लेखकों को नौकरियाँ दिलवायी। अगर किसी योग्य किंतु तंगहाल लेखक की बिटिया के विवाह का प्रश्न उठा, तो गिरिराज ने उसकी पुस्तक पाठ्यक्रम में निर्धारित करवाने में मदद करके उसे संकट से उबारा।''[2] उक्त कथन से उनके दरियादिल एवं मददगार व्यक्तित्व का परिचय हो जाता है। जितना हो सके, वे विभिन्न धरातलों पर एक दूसरे की सहायता अवश्य करते हैं।

1.2.6 मिलनसार -

गिरिराज किशोर मिलनसार व्यक्ति है अगर कोई व्यक्ति उनसे मिलने के लिए

---

1. सं. डॉ. राधेश्याम शर्मा - 'मधुमती' (जुलाई 1995), पृष्ठ - 34
2. सं. रवींद्र कालिया - सृजन के सहयात्री (1996), पृष्ठ - 23

आता है तो वे अपना काम छोड़कर उससे बातें करना पसंद करते हैं। वे कभी किसी को अपने से निम्न नहीं मानते। उनको कोई भी मिलने के लिए आता है तो वे उनसे बड़ी आत्मीयता से बातें करते हैं और उनके स्वभाव की यह विशेषता है कि उनमें प्राचीनता एवं नवीनता का समन्वय दिखाई देता है। वे बालक से लेकर वृद्धों तक बड़े प्यार से बातें करते हैं।

1.2.7 आस्थावान -

गिरिराज किशोर ईश्वर को माननेवाले व्यक्ति हैं। वे पूजा-पाठ करते हैं। एक लेखक के रूप में वे ईश्वर की सत्ता मानते हैं। वे कहीं भी जाते हैं तो जल्द से जल्द घर लौटते हैं। लखनऊ में उनके 'चेहरे चेहरे किसके चेहरे' इस नाटक को 'भारतेंदु पुरस्कार' मिला था। उस समय रवींद्र कालिया ने उन्हें होटल में ठहरने की बिनती की लेकिन उन्होंने होटल में रहने से इन्कार किया। इस संदर्भ में रवींद्र कालिया कहते हैं - "मालूम हुआ वह अपना पूजा का सामान साथ नहीं लाया था, अगर रूक गया होता तो पूजा कैसे करेगा।"[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि वे ईश्वरवादी व्यक्ति हैं। अपना पूजापाठ का सामान साथ में न होने के कारण वे होटल में ठहरने की रवींद्र कालिया की बात को टालते हैं।

1.3 कृतित्व अर्थात् गिरिराज किशोर की साहित्य-यात्रा :

गिरिराज किशोर स्वातंत्र्योत्तर काल के हिंदी साहित्य जगत् में उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, समीक्षक एवं आलोचक के रूप में प्रसिद्ध हैं। परिश्रम उनकी सफलता का रहस्य है। गिरिराज किशोर ने सन् 1960 से लेकर अब तक पंद्रह उपन्यास, ग्यारह कहानी संग्रह, सात नाटक, एक एकांकी संग्रह, छह आलोचनात्मक ग्रंथ तथा तीन बाल-साहित्य से संबंधित पुस्तकें लिखकर हिंदी साहित्य को समृद्ध करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। संक्षेप में कहना होगा कि गिरिराज किशोर की आज तक की साहित्य यात्रा उल्लेखनीय रही है -

---

1. सं. रवींद्र कालिया - सृजन के सहयात्री (1996), पृष्ठ - 29

1.3.1 **उपन्यास साहित्य** -

1. लोग	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1966
2. चिड़ियाघर	सरस्वती विहार, शाहदरा, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1968
3. यात्राएँ	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1971
4. जुगलबंदी	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1973
5. दो	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1974
6. इंद्रसुने	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1978
7. दावेदार	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1978
8. तीसरी सत्ता	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1982
9. यथा प्रस्तावित	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1984
10. परिशिष्ट	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1987
11. असलाह	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1987
12. अन्तर्ध्वंस	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1990
13. ढाई घर	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1991
14. यातना घर	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1997
15. पहला गिरमिटिया	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1999

1.3.2 **कहानी संग्रह** -

1. नीम के फूल	किताब महल, जीरो रोड, इलाहाबाद	प्रथम संस्करण 1964
2. चार मोती बेआब	भारती भंडार, लीडर रोड, इलाहाबाद	प्रथम संस्करण 1964

3. पेपरवेट	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1967
4. रिश्ता और अन्य कहानियाँ	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1968
5. शहर-दर-शहर	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1976
6. हम प्यार कर ले	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1980
7. जागत्तारनी और अन्य कहानियाँ	संभावना प्रकाशन, हाडुप, मेरठ	प्रथम संस्करण 1981
8. लहू पुकारेगा (संपा.)	सरस्वती प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1981
9. गाना बड़े गुलाम अली खाँ का	नेशनल पब्लिसिंग हाऊस, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1986
10. वल्द रोटी	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1992
11. यह देह किसकी है	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1992

1.3.3 **नाटक साहित्य** -

1. नरमेध	नटरंग दूवारा प्रकाशित	प्रथम संस्करण 1972
2. प्रजा ही रहने दो	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1980
3. घास और घोडा	सरस्वती विहार, शाहदरा, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1980
4. चेहरे-चेहरे किसके चेहरे	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद	प्रथम संस्करण 1983
5. केवल मेरा नाम लो	हिंदी साहित्य भवन, कानपुर	प्रथम संस्करण 1984
6. जुर्म आयद	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1987

1.3.4 **एकांकी साहित्य** -

1. बेगम गुलाम बादशहा	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1979

1.3.5 बाल साहित्य -

1. बच्चों के निराला।
2. सोने की गुड़िया ।
3. पके सोने के पेड़।

1.3.6 आलोचना साहित्य -

1.	संवाद सेतु	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1983
2.	लिखने का तर्क	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1991
3.	कथ-अकथ	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1991
4.	सरोकार	नेशनल प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1992
5.	सप्नवर्णी (संस्मरण)	किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1992

1.3.7 अनूदित रचनाएँ -

1. 'ए डेथ इन डेलही (पैगुंठन सीरिज)...' स्व.श्री. गॉर्डन सी रोडरमल द्वारा आधुनिक हिंदी कहानियों के संग्रह में सम्मिलित कहानी 'रिलेशनशिप'। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, प्रेस बर्फले द्वारा प्रकाशित।
2. हिंदी कहानियों का जर्मन भाषा में संग्रह - डॉ. लोठार लुत्से द्वारा जर्मन भाषा में अनूदित। कहानियों के संग्रह में (अलग-अलग कद के आदमी) जर्मन भाषा में अनूदित एवं सम्मिलित।
3. लिट्रेचर डी लीण्डे (अनूदित) - फ्रेंच भाषा में प्रकाशित संग्रह में सम्मिलित कहानी।
4. हिंदी शार्ट स्टोरी (अंग्रेजी) - सर्वश्री प्रभाकर माचवे एवं श्रवण कुमार द्वारा अंग्रेजी में अनूदित एवं संपादित संग्रह में 'पेपरवेट' कहानी सम्मिलित।
5. 'यथा प्रस्तावित' एवं 'असलाह' उपन्यास - कन्नड भाषा में अनूदित।

6. 'ढाई घर' का प्रसिद्ध पंजाबी कवि डॉ. हरभजनसिंह द्वारा पंजाबी में अनुवाद। प्रो. पी.पी. साह द्वारा अंग्रेजी में भी अनुवाद हुआ है।
7. 'यात्राएँ' उपन्यास पर नीदरलैंडस् के 'लीडन विश्वविद्यालय' के हिंदी प्रोफेसर 'थिये डेमेस्तेख्त' ने लगभग साढ़े तीन सौ पृष्ठों का विश्लेषणात्मक ग्रंथ लिखा है जो वही से प्रकाशित हुआ है। गिरिराज किशोर की कई कहानियों का फ्रेंच, जर्मन, अंग्रेजी, रुसी तथा भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

1.4 पुरस्कार एवं सम्मान :

1. सन् 1992 में गिरिराज किशोर के 'ढाई घर' (उपन्यास) को साहित्य एकेडेमी सम्मान से पुरस्कृत किया गया है।
2. गिरिराज किशोर के 'परिशिष्ट' (उपन्यास) को मध्य प्रदेश, साहित्य परिषद, भोपाल की ओर से 'अखिल भारतीय देव जू पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।
3. 'चेहरे चेहरे किसके चेहरे' (नाटक) पर उत्तर प्रदेश के हिंदी संस्थान कानपुर का 'भारतेंदु पुरस्कार'।
4. हिंदी संस्थान द्वारा 'साहित्य भूषण' पुरस्कार।
5. उत्तर प्रदेश हिंदी संमेलन द्वारा प्रो. वासुदेव सिंह स्वर्ण पदक।
6. इन्टर नेशनल बायोग्राफिकल कॉर्पोरेशन, लंदन से 'इंटरनेशनल आर्डर आफ मेरिट'।
7. संगीत नाटक अकादमी उत्तर प्रदेश द्वारा नाट्य लेखन पर सम्मान।
8. उत्तर प्रदेश हिंदी संमेलन द्वारा 'भागवती प्रसाद बाजपेयी' शताब्दी सम्मान।
9. सन् 1999 के लिए राष्ट्रपति द्वारा भारतीय भाषा परिषद कलकत्ता का 'शतदल' सम्मान।
10. 'पहला गिरमिटिया' के लिए के. के. बिरला संस्थान का 'व्यास सम्मान'।

विश्वास पाटील : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.5 व्यक्ति परिचय :

विश्वास पाटील मराठी के प्रसिद्ध उपन्यासकार, कहानीकार तथा नाटककार के रूप में प्रसिद्ध है। इनका मराठी उपन्यास साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनके साहित्य का परिचय देखने से पूर्व उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व देखना आवश्यक है। वह इस प्रकार है -

1.5.1 जन्म-तिथि तथा जन्म स्थान -

स्वातंत्र्योत्तर काल के मराठी के बहुचर्चित उपन्यासकार, कथाकार तथा नाटककार विश्वास पाटील का जन्म 28 नवम्बर, 1959 को महाराष्ट्र में स्थित कोल्हापुर जिले के नेर्ले नामक ग्राम में कृषक परिवार में हुआ।

1.5.2 माता-पिता -

विश्वास पाटील की माँ का नाम हौसाबाई है। विश्वास पाटील की माँ खेती में काम करनेवाली गृहीणी है। इनके पिता का नाम महिपति पाटील है। पिताजी 'किसान कामगार पक्ष' के नेता थे। वे खेती में काम करते थे। 'किसान कामगार पक्ष' के नेता होने के कारण बचपन से ही किसानों की सभाएँ, जुलूस आदि से परिचित थे। विश्वास पाटील ने जो कुछ लिखा है उसे वे पढ़ते हैं। अत: कहना सही होगा कि इनके पिता की लेखन के प्रति आस्था तथा रुचि रही है। उम्र के 85 वर्ष की आयु में भी वे पढ़ते हैं। इस बारे में स्वयं विश्वास पाटील कहते हैं - "मी काही नवं लिहलं तर प्रथम तेही वाचतात."[1] (मैंने कुछ नया लिखा तो सबसे पहले वे पढ़ते हैं।) कहना गलत न होगा कि विश्वास पाटील के लेखन के सबसे पहले पाठक उनके पिताजी रहे हैं।

1.5.3 परिवार -

इनका परिवार किसानों के परिवारों में से एक है। इनका परिवार संयुक्त पद्धति का दिखाई देता है। विश्वास पाटील को एक भाई तथा तीन बहने हैं। इनके भाई का

---

1. डॉ. सुवर्णा निंबाळकर - शोध झाडाझडतीचा, पृष्ठ - 168

नाम सुरेश पाटील है जो पत्रकार है। इनके बहनों के नाम नंदा, रंजना तथा कमला हैं। विश्वास पाटील को तीन लड़कियाँ हैं। उनके नाम हैं - प्रियदर्शनी, आम्रपाली तथा इंद्रजा।

1.5.4 बचपन -

विश्वास पाटील का बचपन महाराष्ट्र के अपने गाँव नेर्ले जिला कोल्हापुर में बीता। बचपन से उन्हें वीर योद्धाओं तथा नेताओं के गुणगान के गीत गाने का शौक था। इस संबंध में डॉ. सुवर्णा निंबालकर लिखती हैं - "शालेय जीवनातच त्यांनी वक्तृत्वाचे धडे घेतले आणि पोवाडे गायनाबरोबरच वक्तृत्वाची कलाही अवगत करून घेतली."[1] (हाईस्कूल से ही उन्हें वक्तृत्व के पाठ अर्जित किए और पोवाडे के गीतों के साथ-साथ वक्तृत्व की कला को भी अर्जित किया।) अत: कहना सही होगा कि उन्हें बचपन से ही वक्तृत्व का शौक था। इस बारे में स्वयं विश्वास पाटील कहते हैं - "मी नेताजीचा 'पुढारी' मधील लेख वाचून दुसऱ्या दिवशी शाळेमध्ये नेताजीवर बत्तीस मिनिटे बोललो होतो."[2] (मैंने नेताजी के बारे में 'पुढारी' में लेख पढ़कर दूसरे दिन हाईस्कूल में 'नेताजी' इस विषय पर बत्तीस मिनट वक्तृत्व किया था।) उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि विश्वास पाटील को वक्तृत्व का शौक था।

1.5.5 शिक्षा -

इनकी प्रारंभिक शिक्षा महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले के नेर्ले नामक गाँव की पाठशाला में हुई। इनकी आठवीं तक की पढ़ाई कोल्हापुर में हुई। नौंवी की पढ़ाई अपने मामा के यहाँ पांचगणी में हुई। पाचगणी में वे 'महात्मा फुले हाईस्कूल' से नौंवी उत्तीर्ण हुए। बाद में दसवी की पढ़ाई 'कोकरुड' जिला सांगली में हुई। "कोल्हापूरच्या न्यू कॉलेजमध्ये बारावी ते बी.ए. पर्यंतचे शिक्षण."[3] (कोल्हापुर के न्यू कॉलेज में बारहवीं से बी.ए. तक की पढ़ाई।) सन् 1982 में शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के अंग्रेजी विभाग से एम.ए. की उपाधि हासिल की। इसी विश्वविद्यालय से उन्होंने एलएल.बी. की उपाधि हासिल की। महाविद्यालयीन पढ़ाई के दौरान इन्होंने मराठी, अंग्रेजी आदि विभिन्न प्रकार के उपन्यासों का अध्ययन किया। "सन १९८२ मध्ये ते राज्य सिव्हिल सर्व्हिस परीक्षा पास झाले व 'डेप्युटी कलेक्टर' या उच्च पदावर सरकारी अधिकारी म्हणून रुजु झाले."[4] (सन् 1982 में वे राज्य

1. डॉ. सुवर्णा निंबाळकर - शोध झाडाझडतीचा, पृष्ठ - 168
2. परिशिष्ट - 1 से उद्धृत
3. सं. प्रभा गणोरकर - संक्षिप्त मराठी वाङ्मय कोश (1920 पासून 2003 पर्यंतचा कालखंड), पृष्ठ - 433
4. डॉ. सुवर्णा निंबाळकर - शोध झाडाझडतीचा, पृष्ठ - 26

सिव्हिल सर्व्हिस की परीक्षा उत्तीर्ण हुए और उपजिलाधिकारी के रूप में उनकी नियुक्ति हुई।) आज वे मुंबई में कलेक्टर के रूप में कार्य कर रहे हैं।

1.5.6 नौकरी -

सन् 1982 में राज्य सिव्हिल की परीक्षा उत्तीर्ण हुए। इन्होंने अब तक पुणे, कोल्हापुर, सांगली, ठाणे आदि विभिन्न स्थानों पर कार्य किया है। अभी वे मुंबई में कलेक्टर के रूप में कार्य कर रहे हैं।

1.5.7 विवाह -

मनुष्य के जीवन में विवाह का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। विश्वास पाटील का विवाह चंद्रसेना से हुआ। चंद्रसेना ने विश्वास पाटील के लेखन में मदद की है तथा उनके सुख-दु:ख में सदैव साथ दिया है।

1.5.8 दांपत्य जीवन -

विश्वास पाटील के साहित्यिक व्यक्तित्व निर्माण में दांपत्य जीवन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। चंद्रसेना का पाटील जी के लेखन में समय-समय पर साथ रहा है। 'महानायक' उपन्यास लिखते समय पाँच सौ पन्नों का पुनर्लेखन का कार्य पुरा किया। अपने दांपत्य जीवन के बारे में स्वयं विश्वास पाटील कहते हैं - ''तिचा माझ्या लेखन प्रवासातला सहभाग हे मी माझे सद्भाग्य समजतो.''[1] (उसका मेरे साहित्य निर्मिति में योगदान मैं मेरा सद्भाग्य मानता हूँ।) उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि पाटील जी के लेखन में तथा साहित्य सृजन में उनकी पत्नी का महत्त्वपूर्ण साथ रहा। अत: कहना सही होगा कि वे अपने दांपत्य जीवन से संतुष्ट हैं।

1.6 व्यक्तित्व की विशेषताएँ :

विश्वास पाटील के व्यक्तित्व पर विभिन्न विशेषताओं का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। उनके बाह्य एवं आंतरिक व्यक्तित्व पर विवेचन विश्लेषण प्रस्तुत है। वह इस प्रकार है -

---

1. डॉ. सुवर्णा निंबाळकर - शोध झाडाझडतीचा, पृष्ठ - 168

1.6.1 बाह्य और आंतरिक व्यक्तित्व -

विश्वास पाटील का बाह्य व्यक्तित्व आकर्षक है। इनका व्यक्तित्व देखनेवाले का प्रथम दर्शन में ही प्रभावित करनेवाला है। गोरा वर्ण, ऊँचा कद, दीप्तिमान चेहरा देखनेवाले को मोहित करनेवाला है। जितना उनका बाहरी व्यक्तित्व आकर्षक है उतना ही आंतरिक व्यक्तित्व। उनका सरल स्वभाव, स्नेहपूर्ण व्यवहार, दूसरों को मदद करने में तत्पर, विनोदपूर्णता उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ हैं।

1.6.2 मेधावी व्यक्तित्व -

विश्वास पाटील बचपन से ही पढ़ने-लिखने में रूचि रखते थे। वे जब नौंवी कक्षा में थे तब दीवाली एवं गर्मियों की छुट्टी में उन्होंने दो सौ सत्तर किताबें पढ़ी थीं। जब वे दसवीं में थे तभी उन्होंने 'कायदा' कहानी लिखी और 'तरूण भारत' पुणे के 'वासंतिक अंक' में वह छपकर आ गई और उन्हें इस कहानी के लिए सौ रुपये पुरस्कार के रूप में प्राप्त हो गए। सन् 1982 में उन्होंने 'राज्य सिव्हिल सर्व्हिस' की परीक्षा उत्तीर्ण की। अत: कहना सही होगा कि विश्वास पाटील बचपन से ही मेधावी छात्र रहे हैं।

1.6.3 विभिन्न रचनाकारों से प्रभावित -

विश्वास पाटील को बचपन से ही पढ़ने का शौक था। बचपन में ही मराठी तथा अंग्रेजी उपन्यास की ओर वे आकृष्ट थे। बचपन में ही इन्होंने मराठी उपन्यासों को पढ़ा जिसमें वे मराठी साहित्यकार र.वा.दिघे के 'सराई' उपन्यास से विशेष प्रभावित रहे। इसके बाद इन्होंने मराठी के अण्णा भाऊ साठे का 'फकिरा', 'चित्रा', 'माकडीचा माळ', उद्धव शेळके का 'धग', चि.त्र्यं. खानोलकर का 'रात्र काळी घागर काळी' आदि विभिन्न रचनाएँ पढ़ी तथा बचपन से ही इन रचनाओं से भी वे अधिक प्रभावित हुए।

1.7 कृतित्व अर्थात विश्वास पाटील की साहित्य-यात्रा :

विश्वास पाटील अंतिम दो दशक के मराठी साहित्य जगत् में प्रसिद्ध उपन्यासकार, कहानीकार और नाटककार के रूप में प्रसिद्ध हैं। इन्होंने अब तक आठ उपन्यास,

एक कहानी संग्रह, एक नाटक, एक अनूदित साहित्य का लेखन किया है। उनका कृतित्व अर्थात लेखन-साहित्य इस प्रकार है -

1.7.1 उपन्यास साहित्य -

1. आंबी	शेट्ये प्रकाशन, कोल्हापुर	प्रथम संस्करण 1980
2. क्रांतिसूर्य	सन्मित्र प्रकाशन, कोल्हापुर	प्रथम संस्करण 1984
3. पानिपत	राजहंस प्रकाशन, मुंबई	प्रथम संस्करण 1988
4. पांगिरा	ग्रंथाली प्रकाशन, मुंबई	प्रथम संस्करण 1990
5. झाडाझडती	राजहंस प्रकाशन, पुणे	प्रथम संस्करण 1992
6. महानायक	राजहंस प्रकाशन, पुणे	प्रथम संस्करण 1998
7. चंद्रमुखी	राजहंस प्रकाशन, पुणे	प्रथम संस्करण 2004
8. संभाजी	मेहता प्रकाशन, पुणे	प्रथम संस्करण 2005

1.7.2 कहानी साहित्य -

1. कलाल चौक	शेट्ये प्रकाशन, कोल्हापुर	प्रथम संस्करण 1982

1.7.3 नाटक साहित्य -

1. इन्होंने अब तक एक मात्र ही नाटक लिखा है 'रणांगण'।

1.7.4 अनूदित साहित्य -

1. चलो दिल्ली	राजहंस प्रकाशन, पुणे	प्रथम संस्करण 1986

1.8 पुरस्कार एवं सम्मान :

विश्वास पाटील मराठी में एक सशक्त उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनके सशक्त कृतित्व का परिचय उनको मिले पुरस्कार एवं मान-सम्मानों से दृष्टिगोचर होता है। अब तक विश्वास पाटील को निम्नांकित पुरस्कार एवं मान-सम्मानों से विभूषित किया गया है -

1.8.1 'पानिपत' (सन 1988) उपन्यास को प्राप्त पुरस्कार -

1. प्रियदर्शनी पुरस्कार।
2. महाराष्ट्र साहित्य परिषद का वामन मल्हार जोशी पुरस्कार।
3. कलकत्ता का भाषा परिषद पुरस्कार।
4. बा.सी.मर्ढेकर पुरस्कार - अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलन, पुणे।
5. नाथमाधव पुरस्कार - उत्कृष्ट कादंबरी, पुणे।
6. इचलकरंजी चॅरिटेबल ट्रस्ट पुरस्कार।
7. गाडगीळ पुरस्कार ।

1.8.2 'झाडाझडती' (सन 1992) उपन्यास को प्राप्त पुरस्कार -

1. साहित्य अकादमी पुरस्कार, नई दिल्ली।
2. मधुराबाई सार्वजनिक वाचनालय, बीड की ओर से महात्मा फुले साहित्य व वाङ्मय पुरस्कार, सन् 1991-92।
3. रोहमारे ग्रामिण साहित्य पुरस्कार।
4. पुणे नगर वाचन मंदिर का कै. श्री.ज. जोशी पुरस्कार, सन् 1992।
5. महाराष्ट्र साहित्य परिषद का कै. वामन मल्हार जोशी पुरस्कार, सन् 1992-93।
6. मारवाडी साहित्य परिषद का घनश्यामदास साहित्य पुरस्कार, सन् 1993।
7. पंडित नेहरू ग्रामिण ललित कला अकादमी, प्रवरानगर की ओर से पद्मश्री विखे पाटील साहित्य पुरस्कार, सन् 1992-93।

1.8.3 'महानायक' (सन 1998) उपन्यास को प्राप्त पुरस्कार -

1. कादंबरीचे महाराष्ट्र शासन, कऱ्हाड पुरस्कार।
2. मुकदम साहित्य पुरस्कार।

1.8.4 'संभाजी' (सन 2005) उपन्यास को प्राप्त पुरस्कार।

1. सन् 2006 का 'सहकार महर्षी' साहित्य पुरस्कार।

1.8.5 विदेशी यात्राएँ -

विश्वास पाटील ने 'महानायक' उपन्यास लिखने के दौरान जपान, ब्रह्मदेश, थायलंड, जर्मनी, फ्रान्स, इंग्लैंड, इटली, टोकियो आदि विभिन्न देशों की यात्राएँ की हैं।

1.9 विश्वास पाटील के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय :

स्वातंत्र्योत्तर मराठी उपन्यासकारों में विश्वास पाटील का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं उपन्यास, कहानी तथा नाटक आदि क्षेत्र में लेखन किया है। उन्होंने उपन्यासों के विषय के रूप में ऐतिहासिक, चरित्रात्मक, ग्रामीण व सामाजिक आदि को केंद्र में रखकर उपन्यासों का लेखन किया है। विश्वास पाटील जी के औपन्यासिक कृतित्व का यहाँ संक्षिप्त परिचय दिया है -

1.9.1 'आंबी' (शेट्ये प्रकाशन, कोल्हापुर 1980) -

प्रकाशन क्रम की दृष्टि से 'आंबी' विश्वास पाटील का पहला ग्रामीण उपन्यास है। इस उपन्यास का प्रथम प्रकाशन शेट्ये प्रकाशन, कोल्हापुर से सन् 1980 में हुआ है। 'आंबी' यह प्रतिष्ठित परिवार के दुर्दैवी लड़की की शोकांतिका है। 'आंबी' नामक लड़की रंगा पहलवान के साथ प्यार करती है। पिता को यह बात मालूम होने पर वे इस प्यार का विरोध कर उसकी 'चिंचोड' नामक ग्राम के गीरंग से शादी कराते हैं जो कि नपुंसक है। इस नपुंसक गीरंग के कारण उसका वैवाहिक जीवन बिगड़ जाता है। रामू काका की मदद से उसकी दूसरी शादी ट्रक ड्रायव्हर तुका के साथ होती है। तुका व्यसनी और व्यभिचारी है। दूसरी शादी के बावजूद आंबी को परिवार का सुख नहीं मिलता। जब जीना असह्य हो जाता है तब अपनी लड़की के साथ कुएँ में कूदकर जान देती है। इस प्रकार 'आंबी' का दुर्दैवी अंत हो जाता है।

इस प्रकार समाज में प्रतिष्ठित समझे जानेवाले परिवार के 'आंबी' का दुखद अंत दिखाना तथा अपने प्यार के प्रति पिता के द्वारा विरोध के कारण 'आंबी' को किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है यही दिखाना विश्वास पाटील का प्रधान उद्देश्य रहा है।

1.9.2 'क्रांतिसूर्य' (सन्मित्र प्रकाशन, कोल्हापुर, 1984) -

प्रकाशन क्रम की दृष्टि से 'क्रांतिसूर्य' विश्वास पाटील का दूसरा महत्त्वपूर्ण चरित्रात्मक उपन्यास है। इस उपन्यास का प्रथम प्रकाशन सन्मित्र प्रकाशन, कोल्हापुर से सन् 1984 को हुआ। इस उपन्यास में विश्वास पाटील ने सातारा के थोर क्रांतिकारक क्रांतिसिंह नाना पाटील के जीवन चरित्र का तथा व्यक्तित्व का परिचय दिया है। इसमें उनके जीवन के सत्यशोधन आंदोलन, गांधीवादी काँग्रेस आंदोलन, किसान कामगार पक्ष के नेता, दलितों के उद्धारक ऐसे विभिन्न गुणों से युक्त नाना पाटील के व्यक्तित्व के पहलुओं को व्यक्त किया है। इस उपन्यास में क्रांतिसिंह नाना पाटील को शूर, नीड़र, निःस्वार्थी एवं ईमानदार के रूप में दिखाया है।

यह उपन्यास लिखने के कारण लोगों के मन में नाना पाटील को लेकर जो संदेह था या उनके बारे में जो पूर्वग्रह था उसे मिटाकर नाना पाटील के सच्चे रूप को पाठकों के सामने रखने का प्रयास किया है।

1.9.3 'पानिपत' (राजहंस प्रकाशन, मुंबई, 1988) -

प्रकाशन क्रम की दृष्टि से 'पानिपत' विश्वास पाटील का तीसरा ऐतिहासिक उपन्यास है। इसका प्रथम प्रकाशन राजहंस प्रकाशन, पुणे द्वारा सन् 1988 में हुआ है। यह विश्वास पाटील का सबसे प्रसिद्धि दिलानेवाला तथा उनको चरमोत्कर्ष पर ले जानेवाला महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास का अब तक हिंदी, गुजराती, कन्नड तथा पंजाबी आदि भाषाओं में अनुवाद हुआ है। 'पानिपत' के जरिए लेखक ने आपसी बैरभाव, अनमेल तथा अनबन से होनेवाली हानी के विचारों को प्रस्तुत किया है। युद्धों का वास्तविक एवं सजीव वर्णन करने में पाटील जी को सफलता मिली है। उस समय की भौगोलिक परिस्थिति एवं नैसर्गिक बदलाव के साथ-साथ पात्रों के चरित्र का अतिसूक्ष्म चित्रण में उन्हें महत्त्वपूर्ण सफलता मिली है। 'पानिपत' के बारे में स्वयं विश्वास पाटील कहते हैं - ''पानिपत ही कालची कथा नसून आजची कथा आहे असंच वाचकांना वाटते. महाराष्ट्राच्या राजकारणाचे आणि समाजकारणाचे प्रतिबिंब या कथेत दिसत असल्याने हा विषय ज़ास्तच वास्तव वाटतो.''[1]

1. सं. कुमार केतकर - 'लोकसत्ता' (31 मई, 1992), पृष्ठ - 5

(पानिपत यह कल की कहानी नहीं बल्कि आज की कहानी है ऐसा पाठकों को लगता है। महाराष्ट्र की राजनीति एवं समाजनीति का प्रतिबिंब इस कहानी में दिखाई देने के कारण यह विषय ज्यादा वास्तव लगता है।) उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगति कि 'पानिपत' महाराष्ट्र के राजनीति एवं समाजनीति का प्रतिबिंब है।

1.9.4 'पांगिरा' (ग्रंथाली प्रकाशन, मुंबई 1990) -

प्रकाशन क्रम की दृष्टि से 'पांगिरा' विश्वास पाटील का चौथा ग्रामीण उपन्यास है। इसका प्रथम प्रकाशन ग्रंथाली प्रकाशन मुंबई से सन् 1990 में हुआ। 'पांगिरा' में ग्रामीण जीवन का चित्रण मिलता है। 'पांगिरा' यह 'पांगिरा' और 'डोंगरवाडी' इन दो ग्रामों की कर्मगाथा है। इस संदर्भ में डॉ. रवींद्र ठाकुर कहते हैं - ''आर्थिक आणि राजकीय बदलात आपले स्वत्व हरवलेल्या दोन गावांची कथा 'पांगिरा' या कादंबरीत चित्रित झाली आहे.''[1] (आर्थिक और राजकीय बदलाव में अपने अस्तित्व को खो बैठे दो गाँवों की कथा 'पांगिरा' इस उपन्यास में चित्रित हुई है।) अत: उक्त कथन से कहना सही होगा कि गाँवों के आर्थिक और राजकीय बदलाव की कर्मगाथा 'पांगिरा' है। 'पांगिरा' में पाटील जी ने दस-पंद्रह सालों बाद गाँव में हुए परिवर्तन के अनेक पहलुओं का सूक्ष्मता से चित्रण किया है। इसमें उन्होंने मुख्यत: आर्थिक, सामाजिक एवं नैसर्गिक परिवर्तन को यथार्थता के साथ प्रस्तुत किया है। इसमें उजड़े हुए खेती के, बाढ़ के प्रकोप के, वृक्षों की हानि के वास्तविक चित्रण को अत्यधिक महत्त्व दिया है।

1.9.5 'झाडाझडती' (राजहंस प्रकाशन, पुणे 1992) -

प्रकाशन क्रम की दृष्टि से विश्वास पाटील का 'झाडाझडती' पाँचवा उपन्यास है। इसका प्रथम प्रकाशन राजहंस प्रकाशन, पुणे द्वारा सन् 1992 में हुआ। बाँध पीड़ितों की समस्याओं पर विचार तथा विकास के नाम पर हो रहे विनाश को दिखाना ही झाडाझडती का प्रधान उद्देश्य है। इस उपन्यास में बाँध पीड़ितों के जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करने का प्रयास विश्वास पाटील ने किया है। 'जांभली' गाँव में सरकार द्वारा बाँध निर्माण करना, उसका गाँव के खैरमोडे गुरुजी तथा गाँव के लोग विरोध करते हैं। तब भूमिपूजन के लिए आए

---

1. डॉ. रवींद्र ठाकुर - मराठी ग्रामीण कादंबरी, पृष्ठ - 176

हुए अधिकारी को अवडाक्का कहती है - "तुमचं संसार फुलायसाठी आमची राखरांगोळी करता? तुम्हाला आयाभैनी, घरसंसार हाय का न्हाय?"[1] (आपके परिवारों के फुलने हेतु हमे उद्ध्वस्त करते हो? आपको माँ-बहन तथा घर-परिवार है कि नहीं?) उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि अशिक्षित होकर, बाँध के दुष्परिणाम जानकर आवडाक्का बाँध निर्माण का विरोध करती है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने जांभली के लोगों का वहाँ से 150 मैल दूर 'खैरापूर' गाँव में उनका पुनर्वसन करना, बाँध पीड़ित लोगों की समस्या का, बाँध पीड़ितों के लिए रात-दिन खैरमोडे गुरुजी दूवारा संघर्ष करना, ग्रामीण युवकों की बेकारी का, प्रशासकीय अधिकारियोंदूवारा लोगों को ठगाने की प्रवृत्ति का, लोगों की अंधश्रद्धा का, भ्रष्ट शासन व्यवस्था, नेता लोगों की ठगाने की प्रवृत्ति का चित्रण पाटील जी ने बड़ी सफलता से किया है। बाँध पीड़ित लोगों के बच्चों को शिक्षा का संदेश देते हुए खैरमोडे गुरुजी कहते हैं - "लेको, गेल्या जन्मातलं तुमचं पाप म्हणून तुम्ही धरणग्रस्तांच्या पोटी जन्माला आला. त्या चिखलातनं बाहेर पडायचं असेल तर तुम्हाला शिक्षणाशिवाय सतगत नाही."[2] (बच्चो, पिछले जनम के पाप के कारण तुम बाँध पीड़ितों के यहाँ जन्मे हो। अगर इस कीचड़ से बाहर आना है, तो तुम्हें शिक्षा के बिना सद्गति नहीं।) उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि शिक्षा ही अंधेरे से उजाले की ओर आने का एक मात्र साधन है। विश्वास पाटील 'झाडाझडती' के माध्यम से बाँध पीड़ितों के जीवन का सूक्ष्मता से चित्रण करने में सफल हुए हैं।

1.9.6 'महानायक' (राजहंस प्रकाशन, पुणे 1998) -

प्रकाशन क्रम की दृष्टि से 'महानायक' विश्वास पाटील का छठा महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक एवं चरित्रात्मक उपन्यास है। इसका प्रथम प्रकाशन राजहंस प्रकाशन, पुणे दूवारा सन् 1998 को हुआ। प्रस्तुत उपन्यास स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नायक सुभाषचंद्र बोस के चरित्र पर केंद्रित है। इस उपन्यास में न केवल सुभाषबाबू का चित्रण है। इसके साथ-साथ पं. नेहरु, पटेल, कृपलानी तथा महात्मा गांधी आदि लोगों का भी चित्रण किया है। इस उपन्यास में सुभाषचंद्र बोस के त्याग, देशप्रेम, राष्ट्रवादी, कर्तव्यवादी, जनवादी, त्यागी, स्वाभिमानी आदी विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

---

1. विश्वास पाटील - झाडाझडती, पृष्ठ - 14
2. वही, पृष्ठ - 110

इस उपन्यास में सुभाषबाबू के चारित्रिक पहलुओं का सूक्ष्मता से अंकन करने में विश्वास पाटील जी सफल हुए हैं। इसमें मुख्यत: सुभाषबाबू के आय.सी.एस.से त्यागपत्र, काँग्रेस का अध्यक्ष बनना, महात्मा गांधी जी से मतभेद, जर्मन में हिटलर से मिलना, मदद न मिलने पर पणडुब्बियों से जपान यात्रा, जपान में 'आजाद हिंद फौज' का निर्माण, अमेरीका द्वारा जपान के हिरोशिमा तथा नागासाकी को बम से विध्वंस करना, जपान का अमेरीका को शरण जाना, 18 अगस्त, 1945 में रशिया जाते हुए हवाई जहाज दुर्घटना में नेताजी की मृत्यु होना, नेताजी के आदि से अंत तक किए संघर्ष को दिखाना आदि पर प्रकाश डालना उपन्यासकार का प्रधान उद्देश्य है।

जिन 'आजाद हिंद फौज' के सैनिकों ने अपनी जान की बाज़ी लगाकर देश को स्वतंत्र बनाने के लिए प्रयास किए तथा अपनी जान गँवा दी, ऐसे आजाद हिंद सैनिकों को स्वतंत्रता के पश्चात् न कोई छूट मिली, न कहीं उन्हें मुआवजा मिला। यही शोकांतिका 'आजाद हिंद फौज' के वीरों की है यह भी एक कटु सत्य दिखाने में पूर्ण रूप से विश्वास पाटील को सफलता मिली है।

1.9.7 'चंद्रमुखी' (राजहंस प्रकाशन, पुणे 2004) -

प्रकाशन क्रम की दृष्टि से 'चंद्रमुखी' विश्वास पाटील का सातवाँ उपन्यास है। इसका प्रथम प्रकाशन राजहंस प्रकाशन, पुणे द्वारा सन् 2004 को हुआ। 'चंद्रमुखी' यह विश्वास पाटील का परंपरागत लीक से हटकर लिखा गया नायिका प्रधान उपन्यास है। इस उपन्यास में तमाशा में काम करनेवाली 'चंद्रमुखी' की दु:खदायी व्यथा अंकित है। इसमें प्रमुखत: विश्वास पाटील ने तमाशा में काम करनेवाला परिवार, उसका विकास एवं अधोगति का चित्रण किया है। चंद्रमुखी एक हिराबाई जुन्नरकर व उम्माजी जुन्नरकर की बेटी है। चंद्रमुखी स्वयं का तमाशा केंद्र जल जाने के कारण अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए पैसे कमाने हेतु 'रुक्मिनी कला केंद्र' में काम करती है। वहाँ चंद्रमुखी शारीरिक, मानसिक एवं लैंगिक शोषण का शिकार बनती है। वहाँ चंद्रमुखी 'चिरा' जैसी प्रथा का शिकार बनती है। नखवाशेट चंद्रमुखी का चिरा पाँच लाख को खरीदता है। इसी बीच नानासाहेब जोंधळे वहाँ पहुँचकर नखवाशेट से चंद्रमुखी को लेता है। इसी बीच नानासाहेब जोंधळे उसपर बलात्कार करता है।

वहीं चंद्रमुखी के मन को गहरी चोट पहुँचती है। उसी वक्त खासदार दौलतराव चंदमुखी को अपने प्रेम के जाल में फँसाकर उसका विश्वासघात करता है। विश्वास पाटील ने चंद्रमुखी उपन्यास के माध्यम से 'चंद्रमुखी' की मानसिक व्यथा का एवं तमाशा में काम करनेवाली स्त्रियों के अस्थिर जीवन का चित्रण किया है। यही इस उपन्यास का प्रधान उद्देश्य है।

1.9.8 'संभाजी' (मेहता प्रकाशन, पुणे 2005) -

प्रकाशन क्रम की दृष्टि से 'संभाजी' विश्वास पाटील का आठवाँ ऐतिहासिक तथा चरित्रात्मक उपन्यास है। इस उपन्यास का प्रथम प्रकाशन मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे द्वारा सन् 2005 को हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास में विश्वास पाटील ने संभाजी के पराक्रमि, वीर योद्धा, निड़रता, संवेदनशील, सहनशील, व्यवहारचातुर्य संपन्न, राजकारणी, निर्णयक्षम आदी विभिन्न गुणों से युक्त संभाजी के व्यक्तित्व के पहलुओं का चित्रण किया है। संभाजी की नेतृत्व क्षमता के बारे में डॉ. महेंद्र कदम लिखते हैं - "शेतकऱ्यांना अनुदान देणे, पाण्यावर बांध घालण्यासाठी मदत करणे, दुष्काळात त्यांच्या अस्वस्थतेमुळे अस्वस्थ होऊन त्यांच्यासाठी दक्षिणेकडून रसद मागविणे, हे राज्य सामान्यांचे आहे याचे भान ठेवून कारभार चालवणे या सगळ्यांमधून संभाजीची दूरदृष्टि दिसून येते. इंग्रज, पोर्तुगिजांशी तह करताना त्यांनी घेतलेली काळजी एक परिपक्व नेतृत्वाची खूण आहे."[1] (किसानों को अनुदान देना, बाँध बनाने के लिए मदद करना, अकाल के समय अकाल-पीड़ितों के लिए दक्षिण से रसद प्राप्त करवाना, यह राष्ट्र आम आदमी का है, इस बात का एहसास रखकर राज्य का कारोबार सँभालना आदि बातों से संभाजी की दूरदृष्टि का परिचय मिलता है। अंग्रेज एवं पोर्तुगीजों के साथ करार करते समय उन्होंने जो सावधानी बरती थी वह उनके सशक्त एवं परिपक्व नेतृत्व की निशानी ही है।) उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि उनका हर क्षेत्र को लेकर नियोजन तथा दूरदृष्टि थी। इस उपन्यास के जरिए लेखक ने संभाजी का शत्रु के साथ सात-आठ साल किया हुआ संघर्ष चित्रित किया है। संभाजी स्वयं संस्कृत के ब्रजभाषी कवि थे। उन्होंने येसूबाई के हाथ में दिया हुआ राज्य कारभार आदि विभिन्न पहलुओं को उदघाटित करने का प्रयास किया है। गुलामी प्रथा का विरोध आदि अंग्रेजों के करार के वक्त दिखाई देता है। दिलेरखान का मिलना यही सिर्फ उनके जीवन की सबसे बड़ी दुर्दैवी घटना है।

---

1. डॉ. महेंद्र कदम - संभाजी : वाङ्मयीन गुणवत्ता आणि अभिरूची, पृष्ठ - 2

आज तक इतिहासकारों ने 'संभाजी' को मदिरा पिनेवाला, अहंकारी, राष्ट्रद्रोही तथा औरंगजेब को मिला हुआ ऐसी गलत छवी प्रस्तुत की है। संभाजी की इस पारंपारिक छवी को तोड़ने का प्रयास विश्वास पाटील ने इस उपन्यास द्वारा किया है।

1.10 विवेच्य उपन्यासकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व : साम्य एवं भेद - तुलनात्मक विवेचन :

विवेच्य दोनों उपन्यासकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करने के पश्चात् उनके व्यक्तित्व में हमें कुछ बातों पर साम्य दिखाई देता है, तो कुछ बातों पर भेद दिखाई देता है।

1.10.1 साम्य -

दोनों उपन्यासकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को लेकर जो साम्य दिखाई देते हैं, वे इस प्रकार हैं -

1. गिरिराज किशोर और विश्वास पाटील, दोनों क्रमशः हिंदी तथा मराठी उपन्यास साहित्य में श्रेष्ठ हैं।
2. दोनों साहित्यकारों ने अपने लेखन की शुरुआत अपने शालेय जीवन से की।
3. दोनों साहित्यकारों ने अपने लेखन की शुरुआत कहानी विधा से की है।
4. दोनों साहित्यकारों ने उपन्यास, कहानी तथा नाटक विधा में लेखन किया हुआ दिखाई देता है।
5. दोनों साहित्यकारों का अनुभव क्षेत्र व्यापक है।
6. दोनों ने साहित्य सृजन अपनी नौकरी में रहकर किया है।
7. दोनों गहन अध्येता, चिंतनशील, विषय के प्रति न्याय देनेवाले रचनाकार हैं।
8. दोनों साहित्यकारों का बाह्य व्यक्तित्व साधारण है।

9. दोनों घुमक्कड़ प्रवृत्ति के साहित्यकार हैं।

10. दोनों किसान परिवार में जन्में प्रसिद्ध उपन्यासकार हैं।

11. दोनों रचनाकार अपने दांपत्य जीवन से सुखी दिखाई देते हैं।

1.10.2 **वैषम्य** -

विवेच्य साहित्यकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करने के पश्चात जो वैषम्य दिखाई देते हैं, वे इस प्रकार हैं -

1. गिरिराज किशोर की रचना यात्रा का आरंभ सन् 1964 को दिखाई देता है तथा विश्वास पाटील की रचना यात्रा का आरंभ सन् 1980 में दिखाई देता है।
2. गिरिराज किशोर की तुलना में विश्वास पाटील का लेखन अल्प दिखाई देता है।
3. गिरिराज किशोर शिक्षा क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति रहे हैं तथा विश्वास पाटील प्रशासकीय सेवा से।

* * * *